Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। ऋग्वेद

अहं भूमिं अददाम आर्याय। यही भूमि ईश्वरने आर्यो को दी है।

९२

आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओम हमारा इष्ट है, सत्य हमारा कर्म॥

आर्य समाज में ही आवे, क्यों ?

आर्य समाज प्रवर्तक स्वामी दयानंद सरस्वती

चैत्र शुध्द प्रतिपदा वि.सं. २०५३
बुधवार, दि. २० मार्च १९९६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक, प्रकाशक : श्रीमुनि वशिष्ठ आर्य, वानप्रस्थ
पुस्तिका सोहलवी कुंवरजी वाडी, खामगांव (महाराष्ट्र) 444303

प्रथम संस्करण : ५०००
लागत : १००-०० प्रतिशत
प्रचारार्थ : ५०-०० प्रतिशत
एक प्रति : १-००

कृपया प्रचारार्थ अधिक से अधिक संख्यामे मंगावे।

धर्म राशिका हिसाब

दिपावली दि. २४-१०-९५ का शेष :	1787-30
दि. २५-१०-९५ से दि. १९-३-९६ पर्यंत आय दान दक्षिणादि	18331-55
योग :	20118-85
दि. २५-१०-९५ से १९-३-९६ पर्यंत व्यय - दान, साहित्य प्रचार	19942-45
शेष -	176-40

कार्य प्रारंभ

दि. २०-१०-८७ से १९-३-९६ पर्यंत आय-	1,21,762-70
दि. २०-१०-८७ से १९-३-९६ पर्यंत व्यय -	1,21,586-30
शेष -	176-40

दानदाताओं का आभारी हूं।

श्रीमुनि वशिष्ठ आर्य, वानप्रस्थ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

आर्य समाज में ही आवे। क्यों ?

श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः ।

आर्य समाज की वर्तमान प्रतिमा/छबि लोगों में कुछ इस प्रकार हो गई है कि आर्य समाज याने वह संस्था जहां विधवा विवाह या पुनर्विवाह कराये जाते है, प्रेम विवाह तो अवश्यमेव वहां कराये जाते है और आर्य समाज वह संगठन है जो ईश्वर को नहीं मानता, कोई कोई तो यह भी कह देते है कि आर्य समाज स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा प्रवर्तित है जिन्हे चूहों पर बडा क्रोध था। चूहों से ही प्लेग होता है और प्लेग घर की सफाई करता है। गुजरात में सूरत का अनुभव ताजा है। न जाने कितनी जानें गवाँना पडा है। बडा जोर देकर कहते है कि, इसी प्रकार आर्य समाज तो समाज का ही प्लेग है प्लेग। आर्य समाज के लिये लोगों में कई प्रकार की भ्रांतियां पैदा हुई है, केवल पैदा ही नहीं हुई है तो बडी तेजी से पनप रही है। वास्तविकता और यथार्थता तो यह है कि संसार के मानवमात्र की सफाई आर्य समाज करता है, चाहे अंधविश्वास हो, चाहे पाखंड हो, चाहे अंधश्रद्धा हो, चाहे गुरुडम हो, चाहे अवैज्ञानिकता हो, जो भी मतमतांतर हो चाहे अवतारवाद या चमत्कार हो, आर्य समाज इन दुर्गुणों की दुर्व्यसनों की और दुःखों की सफाई करते हुये परमात्मा के सच्चे ज्ञान का प्रचार प्रसार कर मनुष्य को सच्चा ईश्वर भक्त बनाता है। यही मानव की सच्ची शारीरिक एवं आत्मिक सफाई है।

आर्य समाज के लिये यह भी एक भ्रांति है कि यह नास्तिक समाज है। परंतु ऐसे लोगों को क्या कहे जो ईश्वर के सच्चे अस्तित्व को जानते ही नहीं। सच तो यह है कि ऐसे ही लोग नास्तिक है। आर्य समाज आस्तिकवादी है और आस्तिकता का प्रचार-प्रसार करता है। कहा है- नास्तिको वेदनिंदकः। जो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वेदानुकूल, वेद अविरुद्ध है वह सब आस्तिकता का द्योतक है, किन्तु जो वेदों के याने ज्ञान विज्ञान के शत्रु है, वे ही नास्तिक कहलाते है। जो वैज्ञानिक ईश्वरपर, वेदोंपर विश्वास नहीं करते थे, वे भी आज खग्रास सूर्यग्रहण को प्रत्यक्ष कर, संसार की-विश्व की एक महान सत्ता में विश्वास करने लगे है। अमेरिका में शिकॅगो विश्व विद्यालय में रसायन शास्त्रवेत्ता श्री. क्रेसी मोरिसन ने एक पुस्तक लिखी है जो लाखों की संख्या में भिन्न भिन्न भाषाओं में छपी है। जिसका शीर्षक है- Seven reasons- why should we believe in God ! इस पुस्तक में पृथ्वी, सूर्य, चंद्र, नक्षत्र, तारे, ग्रह इन सभी का भ्रमण इनकी गति, दूरी, पृथ्वी की गहराई, समुद्र की गहराइयाँ, वृक्ष वनस्पतियों की रचना इत्यादि प्रमाण उपस्थित कर यह मानने को बाध्य किया कि इस संसार की रचयिता और नियंत्रक कोई महान वैश्विक ब्रह्माण्ड शक्ति है, उसे कोई गॉड कहते है, कोई अल्लाह कहते है, खुदा कहते है, जिहोवा कहते है, ईश्वर-परमेश्वर-परमात्मा-ब्रह्म कहते है। आर्य समाज उसी महान सर्वशक्तिमान, सर्वेश्वर, सर्वाधार, सर्वान्तरयामी, सच्चिदानंद स्वरुप निराकार निर्विकार प्रभू का हृदय से प्रतिपादन करता है, यह तथ्य, यह आधार आर्य समाज ने महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वतीजी की अपार कृपाद्वारा वेदों से प्राप्त किया है। वेद वह है जो ईश्वरीय अपौरुषेय ज्ञान है। अतः आर्य समाज को नास्तिक मानना और बताना सरासर गलत है।

आर्य समाज के लिये और भ्रांति विद्यमान है कि वह बुराई देखता है, वह छिद्रान्वेषी है। किन्तु ध्यान रहे बुराई देखना कोई बुरी बात नही। आप बाजार में जाते हो, आपको बैंगन-भाटे खरीदना होता है, आप उसे बिना देखे ही खरीदते हो, क्या उसमें छिद्र या बुराई, गला हुवा, सडा हुवा इत्यादि नहीं देखते ? यदि देखतें हो तो बुराई देखना आवश्यक हुवा या नही ? कोई स्प्रिंग की खिलौनागाडी खरीदना हो, क्या उसका स्प्रिंग ठीक काम करता है या नही, यह देखते हो या नही, कहीं स्प्रिंग तो बुरा नहीं, बिना देखे वैसे ही खरीदते हो। नहीं, बुरे स्प्रिंग की कौन खरीदेगा। यदि मिट्टी की गुडीया हो तो उसकी नाक, कान, भुजायें देखते हो या नही ? यदि कोई बुराई दिख पडे तो वह आप नही खरीदोगे, बुराई को छोडकर ही तो खरीदते हो। तब आर्य समाज समाज के गाडी का स्प्रिंग, गुडियों के नाक, कान, आखें, आहार मे ग्राह्य वस्तुओं की बुराई देखे और बतावे तो वह जरुरी और आवश्यक है या नहीं ? संसार में यथायोग्य सुधार और संवृद्धि का लाना हो तो बुराई भगाये सिवा काम ही नहीं चलेगा। कहा है -The moment we stand as reformers, The moment we become destroyers समाज में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालविवाह अनमेल विवाह, विधवा विवाह प्रतिबंध, छूआछूत, उच नीच, विदेशभ्रमण बंदी इ. बुराइयां थी जो देखना ही आवश्यक थी।

आर्य समाज के लिये एक और कुविचार प्रस्तुत है कि वह हमेशा गलती पकडता है। उसे सब तरफ गलतीयांही दीखती है अतः कहते है कि वह गलती पकडनेवाला समाज है। अब सोचिये, एक शिक्षक कक्षामे पढा रहा है, जब ३० विद्यार्थीयोंसे पढाई की परीक्षा करना चाहा परंतु विद्यार्थीयों ने कुछ बाते गलत कही, तो क्या शिक्षक उनकी गलती पकडे बिनाही उन्हे गुण प्रदान करेगा ? यदि एक शिक्षक के लिये यह संभव नही, तो गलती पकडनेसे ही सुधार आवेगा। अतः गलती पकडना किसीप्रकार अनुचित नही। यदि आपके घरका बालक प्राथमिक ४थी कक्षामे पढ रहा हौ और ४का पहाडा कुछ इसप्रकार बोल रहा है कि ४ इके ४, ४ दूना ७, ४ तिया १३, ४ चौकै १८, तो आप उसकी गलती पकडोगे या नही, यदि गलती पकडना आवश्यक है तब तो सुधारकी संभावना होगी। ठीक इसीप्रकार आर्य समाज भी समाजमे विद्यमान गलतीयां पकड पकडकर जातिके लोगोंमे एवं मनुष्य मात्रके सुधार करना चाहता है।

आर्य समाज पर और भी एक बडा भारी आक्षेप लगाया जाता है कि आर्य समाज खंडन करता है। किसीका खंडन करना अच्छी चीज नही। ऐसी धारणा रखनेवाले अपने जीवन के लिये क्यों खंडन करते रहते है, जरा सोचिये तो, मेथी की या पालक की सब्जी क्या बिना जडे खंडन करते हुये आप खाते हो ? क्या आलू का खंड करके नही खाते हो ? क्या रोटीका खंड करके ग्रास नही खाते हो ? क्या घूंट घूंटसे पानी नही पीते हो ? क्या वस्त्र सिलवानेमे दर्जी कपडेका प्रथम खंडन नही करता ? क्या भवन उभारनेमे भूमिका खंड नही किया जाता ? क्या शरीरपर आये फोडे फफोले का खंड नही किया जाता ? रुग्णावस्था मे शल्य चिकित्साकी आवश्यकता पर क्या एक सर्जन खंडन नही करता ? क्या बुरी आदते, बुरे विचार, बुरे व्यवहार, बुरे उच्चारों का खंडन आवश्यक नही ? यदि जाति एवं मानव मात्रकाजीवन उन्नतिशील और विकासात्मक बनाना हो तो खंडन आवश्यकही है, अतः आर्य समाज बिना मतलब खंडन ही करता है यह कहना सत्यतासे कोसो दूर है, हां, भाईसाहब। आपका ऑपरेशनका केस है क्या आप कंपाउंडरसे या निम्न कोटी के डॉक्टर से वह कराते हो ? यदि स्वंय के लिये विशेषता रखनेवाले श्रेष्ठ डॉक्टर की खोज करके उसीके हाथसे ऑपरेशन कराते हो. तो ध्यान रखिये वह श्रेष्ठता रखनेवाला आर्य समाज है जो मानवमात्र को मनुष्य, ऋषि, पितर और देवता बनाता है यह कार्य उस ईश्वरीय पवित्र शुध्द पूर्ण

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद वाणीके ज्ञान विज्ञानसे आर्य समाज करता है। यदि आर्य समाज खंडन करना ही छोडदें, तो फोडेके पीप, मवादसे शरीरकी हानि करते रहो या मानसिक दुर्विचार, अशांती के मवादसे जीवन नारकीय बनाते रहो। लोग कहते है कि बात प्रेम से कहो, शांतिसे कहो। यहां ध्यान रखे कि आर्य समाज मूर्तिपूजा का खंडन करता है, तो क्या किसी मंदिर मे जाकर उसने मूतियोंका प्रत्यक्ष तोडफोड का कार्य या खंडन किया है ? एक भी उदाहरण आप प्रस्तुत नही कर सकोगे। आर्य समाज अशांति स्वंय मे धारण नही करता, परंतु समाज की अशांती बडी शांतीके साथ, क्रोध नही मन्युं के साथ दूर करता है। ध्यान रहे खंडन तो गुरुनानक देव दादू दयाल कबीर, तुकारामादि संतोनेभी किया है। फिर स्वामी दयानंद संस्थापित आर्य समाज पर ही वक्रदृष्टि न रखें।

उपनिर्दिष्ट आक्षेपोका समाधान करने का अल्पसा प्रयास किया है। किन्तु मानवमात्र विशेषकर हिन्दुजाति आर्य समाज को दुश्मन समझती है। इसी समय देवता स्वरुप भाई परमानंदजी की वह पंक्ति इस जाति के संबंधमें याद आती है - मत कर नसीहत (उपदेश) नासेह (उपदेशक) जी मेरा घबडाता है।

मे समझूं उसे दुश्मन, जो मुझे समझाता है॥

ध्यान रखिये कीचड मे पडे बालक को माता रगड रगड कर नहलाती है, उसका क्या उद्देश्य है। सुवर्णकार सोने को बार बार अग्निमे डालकर उसे कुंदन बनानेमे उसका क्या उद्देश्य है ? नये नये वस्त्र मैंले होनेपर पिटाई करके, पटक पटक कर धोने मे क्या उद्देश्य छिपा है ? यदि माताका उद्देश्य पवित्र शुध्द है , कोई प्रकारकी दुर्भावना नही, तो ठीक आर्य समाज वेदमाता के आधारपर मानवमात्र के मैल रगड रगड कर साफ करता है, इसमे आर्य समाजको तो बधाई देना होगा, अभिनंदनही करना होगा अस्तु अब आर्य समाजका सच्चा स्वरुप क्या है इस पर विचार करेंगे।

सन १८६० मे पब्लिक ट्रस्ट ॲक्ट (सार्वजनिक निगम कायदा) पास हुवा उसके अंतर्गत सभी सार्वजनिक संस्थायें पंजीबध्द करना होता है ? चाहे वह संस्था धार्मिक हो या अन्य प्रकारकी। ध्यान रहे आर्य समाज ही वह धार्मिक संस्था है जो सर्व प्रथम १८७५ मे पंजीबध्द की गयी। यह एक जागतिक सार्वभौम संगठन है जो शाश्वत मूल्योंपर आधारित है। It is an universal Organization based on eternal truth.. संसार मे बहुतसी वैश्विक संस्थायें है जैसे लायन्स क्लब अरे ! मनुष्य, मनुष्य नही रहा शेर बना पशु नामाभिधान लिया। जायन्टस क्लब - मनुष्य मनुष्य नही रहा स्वयं को राक्षस जायंटस कहलवा लिया - भाई

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारे प्रगतिपर ही जा रहे है। पशुता की ओरही जा रहे है। तब क्या कहें ? कुछ वैश्विक संस्थायें थोडे बहूत तो मौलिक सिध्दान्त रखती है। परन्तु उनमे पूर्णता नही, आर्य समाज वेदोके शाश्वत सत्य पर आधारित सुदृढ संस्था है। इसके १० नियम है जिसके ५ नियमों मे सत्य का प्रतिपादन किया है। स्वामी दयानंद सरस्वतीने इस प्रकार सत्य को प्राथमिकता और सर्व श्रेष्ठ स्थान दिया है। उन्हे सत्य बहुत प्रिय था। बरेली की घटना है सेठ लक्ष्मीनारायणजी के यहां प्रवचन होते थे। स्वामी दयानंद जैसे प्रकांड पंडित, उद्‌भट विद्वान वेदज्ञ के प्रवचन सुनने गव्हर्नर, कमिश्नर डिस्ट्रीक्ट मॅजिस्ट्रेट, उच्च पदस्थ पादरी अंग्रेज आदि भी आते थे। कुंती के पुत्र कर्ण के जन्म संबंधी प्रसंग पर सारे अंग्रेज जोरसे हंस पडे। इसी मरवोल रुप हंसी को देखकर स्वामीजी ने एक डाट फटकार लगाई कि अपना भी घर देखो, कुवारी मरियम के कैसा अनौरस पुत्र जाया, और यह भी कुवारी के पुत्र होने से आपको लज्ञा नही आती। बस ऐसा कहते ही सारे अंग्रेज लालबुंद होकर आग बबुले हो गये। दुसरे दिन प्रवचन प्रारंभ होने से पूर्व इस कडी आलोचना की सूचना सेठ लक्ष्मीनारायणजी ने स्वामीजी को दी और निष्कपट भावसे स्वामीजीसे प्रार्थना की कि कृपया इसप्रकार कडा, कटु खंडन न करें। स्वामीजीने प्रवचन मे स्पष्ट प्रकट कर दिया कि यदि सत्य बोलनेसे कमिश्नर, कलेक्टर नाराज होते है तो हमे पर्वा नही वह परमात्मा जो सत्य है, वह तो नाराज नही होगा, मै उस प्रभुका ध्यान करुं या यहांके अंग्रेज अफसरोकी सुधि लूं। सत्यवादी प्रखरता से कहनेवाला स्वामी महाभारतके ५००० वर्ष बाद दूसरा नही हुवा।

लाहोर मे स्वामीजी गये। मंदिर मे ठहरे, प्रवचन हुवा स्वामीजीने मूर्ति पूजा का खंडन किया। गाव मे सब तरफ चर्चा हुई। मूर्तिपुजा खंडन के कारण स्वामीजी को मंदिर से बाहर कर दिया। लाहोर के एक मुसलमान डॉ. रहीमखां ने सुना कि हिन्दुओंमे बुत परस्तीका खंडन करनेवाला साधु हुवा है। वह बडे प्रेम उल्हास और उम्मीदसे स्वामीजी को अपने कोठीपर ले गया। वहां प्रवचन हुवा स्वामीजीनें कुरान की धज्जियां उडाई। सारे मुसलमान एकत्र हुये और जिस डॉ. रहीमखांने स्वामीजी को बुलाया था, उसे कोसने लगे, बस फिर क्या था उसने स्वामीजी को कोठीसे बाहर कर दिया। स्वामीजी से पूछा गया, तो बडी शांतिसे वे कहे जहां गंदगी है, उस गंदगी को गंदगी कह कर मैने सफाई कर दी, स्वच्छता करना मेरा काम ही है। स्वामीजीको सत्य कितना प्रिय था, तनिक विचार करें। स्वामीजी शाहापुराधीश के यहां ठहरे थे। वहां जोधपुर नरेशका निमंत्रण प्राप्त हुवा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्वामीजी जानेको तैयार खडे, लोग और स्वयं राजा शाहपुराधीश भी बार बार कहने लगे, स्वामीजी जोधपुर मत जाइये; वहां का राजा विषयलंपट है। वहां वेश्याओंका बोलबाला है, वहां आपका जाना उचित नही। स्वामीजी ने उत्तर दिया यदि लोग और राजा भी मेरी अंगलीयोंकी मोमबत्ती बनाकर जलावे तो भी मै सत्य ही कहूंगा और स्वामीजी चल पडे। जोधपुरके कारण ही स्वामीजी को प्राण बलिदान करने पडे, किन्तु स्वामीजी ने सत्यसे अणुमात्रमी किनारा नही किया। ऐसे अटल सत्यवादी स्वामीजीने आर्य समाज की स्थापना की है, तब क्या आर्य समाज सत्य कहने मे कदापि हिचकीजायगा। नही - नही।

आर्य समाज एक सार्वभौमिक सार्वदेशिक, सार्वकालिक, संगठन है। यह कोई नया धर्म नही, पंथ नही, मत नही, संप्रदाय नही। इसमे गुरु शिष्य परंपरा नही, इसमे मठधिपति या मठानुयायी प्रथा नही कारण यह वेदोपर आधारित है, दयानंद पर नही। जैसे बौध्द मत का आधार गौतम बुध्द है, जैनियोंका आधार उनके तीर्थकर है, ईसाईयो का आधार प्रभु येशु खिस्त है, इस्लाम मत का आधार मोहम्मद पैगंबर साहीब है, वैसे आर्य समाज का आधार स्वामी दयानंद नही । यदि बौध्द मतसे गौतम शाक्य मुनि बुध्दको हटा दिया जावे, तो बौध्द मत घराशायी हो जायेगा, जैन मतसे उनके तीर्थंकरो को हटा दिया जावे, तो जैन मत कहींका नही रहेंगा, यदि ईसाई और इस्लाम से क्रमशः येशू और मोहम्मद साहब को हटा देवे तो वो मत जमीनदोस्त हो जावेंगे, वैसे मात्र आर्य समाज का नही है। यदि स्वामी दयानंद को आर्य समाज से हटा देवे तो भी आर्य समाज अवश्य पूर्वापार रहेगा कारण आर्य समाजका आधार वेद है। वेदसे हित क्या अहित क्या, सत्य क्या असत्य क्या, धर्म क्या अधर्म क्या, परा क्या अपरा क्या, ज्ञान क्या अज्ञान क्या, श्रध्दा क्या अश्रध्दा क्या, भाव क्या अभाव क्या, कर्तव्य क्या अकर्तव्य क्या, इन सारी बातोको जाना जाता है, यह सब जानना मानव मात्र के लिये अपरिहार्य है। ऐसे वेदाधारित संगठन मे आना ही है, इससे जुटना ही है।

किसीने पूछा, जब आर्य समाज मत नही, पंथ नही, संप्रदाय नही तो किस बातका प्रतिपादन यह वेदोके आधारपर करता है ? उत्तर मे निवेदन है कि मनुष्यमात्रका जो स्वाभाविक धर्म है जिसे मानवता कहते है उसीका प्रचार प्रसार आर्य समाज करता है। आर्य समाज का कहना है कि,

'' यही है इबादत, यही दीन इमां।
के मुसीबत में काम आये इन्सा के इन्सा ॥

और आगे कहता है कि -

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिलमें उलफत नहीं तो कुछ भी नही।
गुलमें नहकत नही तो कुछ भी नही।
आदमीमे चाहे हजार जौहर हो।
आदमीयत नही तो कुछ भी नही॥

वेद कहते है कि मनुर्भव जनया दैव्यम् जनम्॥ हे मनुष्य। तू मनुष्य बन। मनुष्य की कसोटी के लिये महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वतीजीने तीन बाते प्रस्तुत की है। १) मत्वा कर्माणि सीव्यति इति मनुष्यः। मननात् मनुष्यः। मनन, विचार, विवेकसे काम करे सो मनुष्य है।

२) जो बात अपनी आत्मा को प्रिय लगती है वह सभी आत्माओंको प्रिय होगी और जो अपने आत्मा के प्रतिकूल है, वह अन्य आत्माओं के लिये भी प्रतिकूल समझकर व्यवहार या आचरण करें। जैसे सत्य मुझे प्रिय है, तो समझिये सत्य सभीको भाता है, प्रिय लगता है, यदि मेरी आत्माओंको मेरी युवा कन्याकी ओर किसीने बुरी नजरसे देखना अच्छा नही लगता तो मै भी किसीकी बहु बेटीकी ओर कुद्दष्टि न डालू - ऐसे शुध्द आचरणवाला मनुष्य कहाता है।

३) मनुष्य का कर्तव्य है कि वह पराक्रमी राजा जो अन्यायी हो उसका अन्याय सहन न करते हुये अपनी शक्तिसे उसका प्रतिकार करें और जो अशक्त वृध्द है पर धर्मात्मा विद्वान है उसको समर्थन दे के वैसे आचरण करें। इन कसोटीयों पर आचार करके मनुष्य तो बन गये, पर किसलिये ? तब वेद कहता है, जनया दैव्यं जनम्। हे मनुष्य। तू दिव्य सुसंस्कारित प्रजा निर्माण कर। ऐसा करनेसे क्या होगा ? परिवारवाले अडोसी पडोसी, समाजवाले, ग्राम नगर वाले एवं राष्ट्र तथा विश्व के नागरीक सुख संतोष पावेंगे। इस विवेचनसे स्पष्ट होगा कि मनुष्य का स्वाभाविक धर्म मानवता है और मनुष्य का मनुष्य बनना आवश्यक है।

आज यदि उच्च शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थीसे पूछा जाय, कि शिक्षा ग्रहण करनेसे तेरा क्या उद्देश्य है, तो झट उत्तर देगा, मुझे इंजिनियर बनना है, मुझे डॉक्टर बनना है इत्यादी। एक इंजिनियर था, उसने सडक बनायी, पूल बनाया, पर चूंकि वह इन निर्माण कार्यमे आधेसे अधिक सीमेंट, टारकोल आदि (सडकमे पूलमे, पूर्णतः न लगाकर) बाहर ही चंद चांदीके सिक्कोंके लिये बेच देता है। परिणामतः सडकमे २ मासमे ही बडे खड्डे पड गये, पूल कमजोर सिध्द हुवा। फलस्वरुप जो माई अपने पुत्रवधुको प्रसव के लिये उस सडक से ले जा रही थी, प्रसूतिगृहसे पहले ही उन खड्डो के कारण रास्तेमे ही प्रसव होते हुये बेहोश हो गयी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूलमे लकीरे पड गयी, यातायात के लिये जारही बस पूल टुटने से नीचे गिर गयी, कुछ मनुष्य अन्जान बालक, वृध्दादि वही मर गये। अरे इंजिनियर, तू इंजिनियर तो बना पर मनुष्य न बना, मानवता उससे कोसो दूर थी। इसी प्रकार डॉक्टर को समझ लिजीये। इसीलिये वेद पुकार कर कहता है, हे मनुष्य, तू प्रथम मनुष्य बन। यह शिक्षा कौन धार्मिक एवं जागतिक संस्था देती है, वह आर्य समाज है, इस पाठ के लिये, जीवन निर्माण के लिये आर्य समाज मे आना पडता है। और वेदमार्गपर चलना पडता है।

प्रश्न उपस्थित हुवा कि बहुतसी धार्मिक संस्थायें भी वेदानुकुल है, वेद की मान्यता रखती है, तब केवल आर्य समाज मे आना क्यों उचित है। ध्यान रहे ऐसी धार्मिक संस्थायें वेद तो रखती है, पर वेदाचरण नही करती. बताइयें कौन वेदमात्र मे ईश्वरकी मूर्ति बनानेका उल्लेख है ? नाम वेद का लेते है पर काम वेद विरुध्द करते हो तब ऐसी धार्मिक संस्थायें कदापि विश्वासपात्र नही हो सकती। ऐसी संस्थाओं ने वेदोके बिगडे भाष्य रखे है उन्हे सचे योगिक अर्थ ज्ञातही नही अतः आर्य समाज ही सचा वेदहितैषी है।

सदाचार, सद्गुण, सत्चरित्र का निर्माण आर्य समाज मे होता है। आर्य शब्द ऋ धातुसे बना है जिसका अर्थ गति + क्रिया है। सातत्यगमने To move constantly गतिशिल बनो और क्रियाशील बनो वह आर्य है। आर्य ईश्वर पुत्र है। आर्य कहता है -

सदाचार का सदा उपासक, दुराचारका नाशक हूं।
दुष्ट दगाबाजोको घातक, पक्का पोलप्रकाशक हूं।
तनको तपाकर स्वर्गमे जाना नही कर्तव्य है।
खुद गर्ज बनकर मोक्षभी पाना नही कर्तव्य है।
सेवा सकल संसारकी करना यही कर्तव्य है।
सर्वस्व परहित के लिये मरना, यही कर्तव्य है। अस्तु

वर्णव्यस्था :

आर्य समाज वेदोके आधारपर वर्णव्यवस्था का प्रतिपादन करता है। मनुस्मृति, गीता इत्यादि भी वर्णव्यवस्था का प्रतिपादन करते है, परन्तु वंश जन्म के आधारपर नही, किन्तु गुणकर्मस्वभावके आधार पर। प्रश्न है कि कितने गीता मंदिरवाले इस तथ्य को मानते है। ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शुद्र यह वर्ण व्यवस्था है। समाज और राष्ट्र के लिये आधार है। शिक्षक, रक्षक, पोषक और सेवक यह चार

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अंग समाज मे विद्यमान होने से ही समाजका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। अज्ञान, अन्याय, अभाव दुर कर असूया, सर्वत्र रहें। ब्राह्मण की बोली, क्षत्रीय की गोली, वैश्य की झोली, और शूद्रकी होली महत्वपूर्ण है। समाज और राष्ट्र निर्माण मे पाठशाला, गोशाला, व्यायामशाला और यज्ञशाला यह तो होना ही है। जिस प्रकार परिवार और समाज राष्ट्र के लिये आवश्यक है इसीप्रकार निम्न चार सूत्र प्रत्येक समाज और राष्ट्र के लिये आधारभूत है।

१) गणात गुणो गरीयान - राष्ट्र मे गणतंत्रनही गुण तन्त्र चाहिये। १०० मुर्खोसे १विद्वान श्रेष्ठ होता है उसीकी गरीमा रहती है। इसी को Quality not equality कहते है।

२) वर्ग सहयोगे न तु वर्ग विरोध :- Class cooperation and not class war दो समाज मे सहयोग चाहिये विरोधसे कोई एक या दोनो समाप्त हो सकते है।

३) बिनाहेतुं न निग्रहानुग्रही No punishment nor reward without discrimination. भारत रत्न का किताब पाकर भारत के दो समाजो मे अविवेकतासे फूट डालना कहांतर ग्रहणीय है ? हमारा ईशारा मदर टेरेसा की ओर है। अतः शिक्षा एवं पारितोषिक विवेकतापूर्ण होना चाहिये।

४) बिना लक्ष्य न विद्या No education without design समाज की आजकी शिक्षा मेकॉले की सन १८३५ की है जिसका कोई उद्देश्य नही, फिरभी वह आज चल रही है। आर्य समाज इन सारे सूत्रों के गुणोसे भरपूर समाज है। अतः इसीके साथ सक्रीय सहयोग करना अनिवार्य है। अन्यथा आज के विद्यमान भ्रष्ट, दुराचारी फल भुगतते रहोंगे। और ऐसे भ्रष्ट वेदविरुध्द समाजके अंग बने रहोगे।

सच्चा ईश्वर स्वरुप :

आज ईश्वर को लोगोने भुला दिया है, सच्चे ईश्वर की पहचान खो दी है। जगह जगह चौ मासोमे और अन्य महिनोमेभी अखंड नाम संकीर्तन, हरिविजय, राम विजय, भक्ति विजय, रामायण, महाभारत, भागवत, गीता, ज्ञानेश्वरी इत्यादि ग्रंथ पढे जाते है या उनका पारायण होता है, सत्संगकी दृष्टि से यह उचित माना जायगा। परन्तु जब मूलतः ही ईश्वरके सच्चे स्वरुप को भूल गये, तो इन ग्रंथोसे कोई लाभ होनेवाला नही है। परमपिता परमात्माने सृष्टि की रचना की है, इसी सृष्टि के जड पदार्थ लेकर हमने परमात्माकाही सृजन कर दिया है। परमात्माने मानव को बनाया, यह भुला दिया गया है और हमे हमारे माता पिताने उत्पन्न किया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है , इसी बातपर टिक गये है। बधुओ ! जिस माताकी गर्भसे हमारा निर्माण कार्य चल रहा, क्या स्वयं वह माता जानती है कि आंख कब बनी, कौन स्यायी इसमे लगी, नासिका कब बनी, कौन मसाला जो सूंघता है उसमे लगा दिया, कर्ण के पडदे किस प्रकार बने, आंख की तितली कौन टेमपरेचर पर किस प्रकार बनी ? अरे, यह तो वह माताभी नही जानती, जिसने गर्भ को धारण किया है। माता तो यहभी नही जानती कि भृकुटियोंके नीचे आंखे, दोनो आंखोंके मध्य नासिका, उसके नीचे मुख और बाजुमे कर्ण क्यों लगा दिये गये। मनुष्यसे आप निर्माण हुये है तो क्या काले वर्ण के भाइयों ने अर्जी की थी कि मुझे काला वर्ण दे दो अपंग अपत्योने क्या जीवनभर अपंग बनने के लिये प्रार्थना की थी ? और आप सभी टाटा, बिडला, हिंदुजा के घरपरही क्यों नही जन्म पाये, या किसी गंधी बस्तीमे क्यों नही गये - कौन इसका फल प्रदाता है ? मानना पडेगा कि ईश्वरने हमे उत्पन्न कियापरन्तु आज सर्वत्र क्या देखते है कि मनुष्य ने ईश्वर बनाये है। बाइबिलमे कहा है God has created man in his own image but it is man who creates God मनुष्य ईश्वरका निर्माता हौ गया है। किसी मनुष्यने सुवर्ण का ३ इंचका, किसीने चांदीका ६ इंच का, किसीने धातुका १॥ फुटका, किसीने काष्ठका तीन फुटका या किसीने मृत्तिकाका ६,७ फुटका ईश्वर बनाया है। विचार कीजिये - क्या ईश्वर कोई परिमाणमे आता है ? किसी मनुष्यने अपने कल्पना विलास से अपने बनाये ईश्वर को लाल, पीला, केशरी, भगवा, नीला, काला रंग लगा दिया, अपनेही विचारसे उसे १ मुख, ३मुख, ४मुख, या पांच मुख लगा दिये है , वस्त्रभी भिन्नभिन्न प्रकारके पहनाये है, आभुषणसे भी उसे सजाया है, उसकी झूंठी प्राणप्रतिष्ठामे झूठाही संतोषभी मान लिया है, ईश्वर मूर्ति सदा खडी कर रखी है, भगवान खडा है पर पुजारी उसके सामने बाजुमे बैठकर पूजा करता है, ईश्वर को प्रथम सुलाता है बादमे भक्त सोता है, प्रातः पहले भक्त उठता है, बादमे भगवान को जगाता है परंतु मानवने अपने भगवान पर एक महान उपकार किया है, उसके पांव दो ही रखे है, यदि उसके चार पाव बना देते, तो वह तथाकथित ईश्वर जानवरों की श्रेणी मे चला जाता। वाहरे मानव, तेरी कल्पना शक्तिका और कारीगरीका कोई पारावार ही नही। धन्य हो हे ईश्वर निर्माता।

जो मनुष्य ईश्वर की सत्तामे विश्वासही नही करते, उनकी तो बात हम छोड देते है। ऐसे लोगोमें जैन बौध्द, चार्वाक मतावलंबी तथा साम्य वादीयों का समावेश होता है । इनके संबंधमे विशेष नही लिखते है।

परंतु जो ईश्वरीय सत्तामे विश्वास रखते है, ऐसे मानवोनेभी कमाल कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिया है। इतनाही नही तो सारे झगडोंकी जड पैदा कर दी है। तनिक विचार करें। पौराणिकोने एक के बदले तीन ईश्वर को माना है, ईसाइयो ने भी तीन की मान्यता रखी है, मुसलमानोने केवल एक ईश्वर अल्लाह - खुदा को माना है, जैनियोने तो २४ मान लिये है। इनकी मान्यताओं के अनुसार उनके ईश्वर रहने के स्थानभी अलग, अलग बताये है। पौराणिक कहते है ईश्वर क्षीरसागरमे, वैकुण्ठमे और कैलासमे विराजते है। ईसाई कहते है ईश्वर चौथे आसमानपर रहता है। मुसलमानो की मान्यता है कि ईश्वर ७वे आसमानपर फरिशतोने उठाये तख्त पर बैठा है। जैन कहते है सर्व २४ ईश्वर मोक्ष शिलापर वास करते है। इस प्रकार ईश्वर को मानने वाले सारे लोग अपनी अपनी बात कहते है किन्तु आर्य समाजही एक अैसी धार्मिक संस्था है जो वेदो के आधारपर कहती है कि ईश्वर निराकार है। सर्व व्यापक है। यही ईश्वर का सच्चा स्वरुप है, किन्तु यह अन्यत्र विद्यमान न होनेसे आर्य समाजमे आना पडता है।

अवतार वाद :

हिंदुओं की मान्यता है कि परमपिता परमात्माके २४ अवतार है, आजपर्यत २३ हुये है और एक अवतार कलंकी होनेवाला है। यह मान्यता बिना पेंदेकी है। साथमें यह भी सुना जाता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्रजी १२ या १४ कलाके अवतार थे और योगीराज श्रीकृष्णजी संपूर्ण १६ कलाके अवतार थे। उन्हे पूर्णावतार कहते है। ईश्वर एक है, यदि दुर्जनतोष न्यायसे मानभी लेवे कि ईश्वर का अवतार होता है। तो एक समय एक ही होगा। परन्तु महदाश्चर्य है कि एक साथमे २-२, ३-३ अवतार ईश्वर के समकालीन होते है वे स्वयं आपस में परस्पर एक दूसरे को जानते भी नही। गीताने अवतारवादचा समर्थन किया है परन्तु ध्यान रहे वह प्रक्षिप्त है, अवतार जीवात्माका होता है, परमात्माका नही। सृजामि अहं, संभवामि युगे युगे इत्यादिसे स्पष्ट है कि जीव बार बार जन्म लेता है, ईश्वर नही। निराकार परमात्माका नित्य अनादि गुण है, यदि गुणोमे परिवर्तन होता है वो वह पदार्थ नष्ट होता है । अवतार शब्द अवतृ धातुसे बना है जिसका अर्थ है उतरना। ईश्वर सर्वव्यापक होनेसे वह नीचे उतरही नही सकता, ना उपर चढ सकता है। अवतारवादने हिंदुओंको सर्वान्तरयामि, निराकार ईश्वरसे विमुख कर दिया है, इतनाही नही तो उन्हे भविष्यवादी, भाग्यवादी, परावलंबी बना दिया है। कुछ लोक प्रश्न करते है कि जीव तो स्वरुप से अजन्मा है, फिर भी जन्म धारण करता है अैसे परमात्माभी स्वरुपसे अजन्मा होते हुये भी जन्म धारण करता है। उत्तर-यह ठीक नही कारण परमात्माके निराकार, सर्वव्यापक इ. गुणोसे वह गिर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जायगा, तब परमात्मा परमात्मा रहेगाही नही । वेदोमे परमात्माके लिये अकायं अव्रणं अस्नाविरं, इ. कहा है जिससे स्पष्ट हैवह ईश्वर शरीर रहित, नसनाडीयोंके बंधनमे न आनेवाला और किसी प्रकारका ब्रण धारण न करनेवाला है। प्रश्न-रुपं रुपं प्रतिरुपो बभूव ऋ ६/४७/१८ इस मंत्र से ईश्वर अवतार सिध्द होता है। उत्तर-परमात्माने मायाके आश्रयसे असंख्य रुपोको धारण किया इससे परमात्मा संसारका अभिन्न निमित्त उपादान कारण होगा। जो वह है नही। क्या मांया ब्रह्म का गुण है ? यदि गुण कहो तो ब्रह्म ब्रह्म ही न रहेगा।

एक गजेन्द्र को मगरमच्छ ने खींचा तो परमात्मा त्वरीत कुद पडा, किन्तु प्रतिदिन प्रातः १ लक्ष गौओ की गर्दनपर कुलहाडा या यांत्रिक धन चलता है तो वह ईश्वर इनकी रक्षा के किये क्यों नही कूद पडता। अे हिंदुओं ! बहुतसे अवतार तो शाप के कारण हुये है, बहुत गंदे काम किये हुये है जो लिखने योग्य नही, ना मानने योग्य है। अतः अवतारवाद वेदविरुध्द होनेसे एवं बुध्दि और तर्क से ग्राहय न होनेसे आर्य समाज उन कलंकित कामोसे छुट्टी दिलाता है। अजी ! ईश्वरको शरीर धारण कर मुहताज / पराधीन बननेसे बचाओ।

यज्ञ व्यवस्थां :

वैदिक मंत्रोसे समस्त १६ संस्कारोमे यज्ञ हवन द्वारा संस्कार कार्य संपन्न करनेकी विधि केवल आर्य समाज मे है। कुछ गायत्री परिवार वाले यज्ञ तो करते है किन्तु पौराणिक विधिकोभी उन्होने अपनाया है। ध्यान रहे, मंत्र, ऋचा, संहिता यह शब्द केवल वेद के लिये ही प्रयुक्त है, कुछ लोग गीताके श्लोकोसे, कुछ तुलसीकी मानस चौपाइयोंसे, कुछ अन्यान्य प्रकारसे यज्ञ संपन्न करते है किन्तु आर्य समाजही एक ऐसी संस्था है जो यज्ञो का विज्ञान प्रस्तुत कर विशुध्द रुपसे यज्ञ करती है और कराती भी है। यज्ञोसे पुरुषोंकी भांति स्त्रीयोंकोभी आहुतीयां प्रदान करनेका अधिकार आर्य समाजमे है। यज्ञ कार्य बिना यज्ञोपवीत धारण किये होता नही, अतः स्त्रीयोंको यज्ञोपवीतका अधिकार एवं स्त्रीयोंको वेदाध्ययन का अधिकार केवल आर्य समाज प्रदान करता है। यज्ञसे भौतिक मानसिक और आत्मिक विकास होता है। ऐहिक और पारलौकिक कल्याण के लिये आर्य समाजमै पधारिये।

विश्वशांतिके उपाय :

आर्य समाज के दस नियम है वे इस प्रकार सार्वभौम, सार्वकालिक है कि कोईभी मनुष्य उसे अस्वीकृत नही कर सकता। इन नियमोमे आर्य समाज का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्देश्य, जो संसार का उपकार करना है अर्थात शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना, निहित है। सबसे प्रेमभावसे रहने का निर्देश इन नियमोमे है और सबकी उन्नतिमे अपनी उन्नती समझनेका महत्तम गुण इसमे वर्णित है। संसारकी कित्नी ऐसी धार्मिक संस्थाये है जो इसप्रकार आदेश देती है। अजी वे तो अपने माननेवालो के अतिरीक्त अन्योका ध्यान भी नही रखतें। इसलिये बस यही विश्वशांती के उपाय है, अन्यत्र यह बात नही। ईश्वरकी उपासना संबंधमेभी निर्देश इन नियमोमे है। ईश्वर पूजाका वैदिक स्वरुप इनमे वर्णित है।

वैदिक संस्कृति :

संसारकी सर्व प्रथम और समस्त संसारको वरणीय, आद्य संस्कृति वैदिक है। वह ज्येष्ठ भी है और श्रेष्ठभी है। संसारकी अन्य धार्मिक संस्थाये इसप्रकार न होनेसे आर्य समाजसे जुटे रहना आवश्यक हो जाता है। कृपया हमारी पुस्तिका वैदिक संस्कृति अवश्य पढें।

वेदाधार :

वैदिक धर्मका एवं आर्य समाजका एकही धर्मग्रंथ है जिसे वेद कहते है। वेदोकी महत्तता किस प्रकार वर्णन करें, वह तो निर्भ्रान्त ईश्वरीय-अपौरुषेय-वाणी है - ज्ञान है, जो शुध्द वैज्ञानिक Scientific, तर्कशुध्द Logical और बुध्दिग्राह्य Rational है। वह सार्वकालिक सार्वदेशिक सार्वभौमिक और नित्य है। कहा है - पितृदेव मनुष्याणां वेदश्चक्षु सनातनम्। वेदेन पश्यन्तिब्राह्मणः। पश्य देवस्य काव्य न ममार न जीर्यति। इत्यादि वेदोसे जीवन निर्वाह मे और जीवन निर्माण मे इन सबका प्रयोजन सिध्द है, ध्यान रहे वेद सब सत्य विद्याओंका पुस्तक है। जब आर्य समाज का आधार ही वेद है तो अन्यत्र भटकनेकी आवश्यकता नही।

वेदोका त्रैतवाद :

जैन बौध्दोको परास्त कर वैदिक परंपरा का प्रभाव प्रस्थापित करने आद्य शंकराचार्यजीने अद्वैतवाद का प्रचार किया था। पश्चात द्वैतवाद निर्माण हुवा। विशिष्ठाद्वैत शुध्दाद्वैत, द्वैताद्वैत ऐसे भेद एवं मतमतांतर चल पडे। किन्तु वेदोमे जो द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समान वृक्षं परिषस्वजाते यह (ऋ १-१६४/२०) मंत्र आया है सो विशुध्द रुपसे त्रैतवादका प्रतिपादन करता है। ईश्वर जीव और प्रकृति तीनो अनादि सत्तायें है। इनका न कोई आदि है न अन्त, यह तीनो सनातन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्तायें है। इसीके सनातन धर्म का पालन करना हो तो केवल आर्य समाजही यह संस्था है, अन्यत्र सारे मतमतांतर विद्यमान है। इन तीन सन्ताओंके सिवा सृष्टिकी रचना हो ही नही सकती। संसार मे तीन कारण वर्तमान है। १) निमित्त कारण जैसे कर्ता (ईश्वर, कुम्हार) २) उपादान कारण - सामग्री - प्रकृति या मिट्टी ३) साधारण कारण - यंत्रादि साधन चक्र और जीव. सर्वत्र जोडीयोंका विधान है जैसे ज्ञान कर्म उपासना है, तीन काल वर्तमान भूत भविष्य है, तीन लोक है पृथिवी अंतरीक्ष द्यौ, तीन स्थितियां उत्पत्ति स्थिति और लय, भर्ता भार्या और संतति, डॉक्टर रोगी और औषधी, दुकानदार ग्राहक माल, सत्व रज तम, स्थूल, सूक्ष्म परमसूक्ष्म, इस प्रकार कई तीन तीन जोडीयां प्रस्तुत कर सकते है। इस जगत के कार्य मे ईश्वर जीव प्रकृति तीन एक दूसरेके पूरक है, शरीरमें जैसे जीव वैसे जीवरुपी शरीरमे परमात्मा रहता है। इस शाश्वत ऋत और सत्य विचार धारा एवं जीवन धारा का नाम ही आर्य समाज है। इस परम वैज्ञानिक एवं सत्यार्थवादी वैदिक त्रैतवादसे आर्य बनो, आर्य बनाओ। बडी ही दुखकी बात है कि इन पुराणवादीयोने ईश्वरीय धर्मग्रंथ वेदोको स्पष्ट जानकर समझ लिया है। महाराष्ट्र प्रदेश के जालना जिलेके परतूर तहसिल अंतर्गत सावरगांव संगमेश्वर तथा इन्दौर (म.प्र.) से ८-१० कि.मि. दुरीपर जो वेद मंदिर है, वहां ऋग्वेद का मुख गर्दभ का, पूर्वाभिमुख श्वेतवर्णका, यजुर्वेदका भेडा, पश्चिमाभिमुख पीतवर्ण, सामवेदका अश्वमुख, दक्षिणाभिमुखनीलवर्ण और अथर्ववेद को मर्कटमुख, उत्तराभिमुख श्वेत वर्णका दर्शाया गया है। आज के प्रगतिशील विज्ञानयुगमे इसप्रकार की मान्यता रखनेवाले भी है, क्या कहें। ऐ भाईयों। तनिक विचार करो और इस पुराण पाखंडको दफना दो।

इसी प्रकार मृतक श्राध्द परंपरा अवैदिक है। यदि एक मृतक पिताके चार बेटे भिन्न नगरोमे अपने अपने घरपर एक ही समय पिताका श्राध्द करे तो बताइये उस मृतक पिताकी एक आत्मा किस जगह जावेगी, सभी जगह पहुंचेगी तो प्रथम तीन स्थानोपर वह अतृप्त रहेगी या नही ? गरुड पुराणानुसार पिता ब्राह्मण के दाहिने उदर कोखमे और पितामह ब्राह्मण के बायी उदरमे विराजते है। तंब बताइये कि प्रथम ब्राह्मण खाते है या पितर ? यदि ब्राह्मण खाते हैं तो पितरोको झूठन खानी पडेगी और यदि पितर पहले खाते है तो ब्रह्मण पितरो का झूंठा खाते है ? किसप्रकार मनगढन्त कार्य चल रहा है। और तीन पीढीके ही पितर तृप्त होते रहते है, क्या बिनापुत्रके पितर अतृप्त रहेगे ? वेद विरुध्द पौराणिक पाखंडने तो कमाल कर दी है। सच्चा सत्य ज्ञान वेदोसेही प्राप्त करें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज की अन्य कुछ विशेषतायें :

सद्गुण सदाचार, चारित्र्य संपन्नता आर्य समाजकी जड है। स्त्रीशिक्षा, पुनर्जन्म, आश्रम व्यवस्था, सात्विक शाकाहार, धर्म अर्थ काम मोक्ष पुरुषार्थ चतुष्टय, जीवनकी १०० वर्षीय योजना, पंचमहायज्ञ का करना जो दैनिक् प्रगतिकी योजना है, वेद का पढना पढाना और सुनना सुनाना, कर्म फल सिध्दान्त, मुक्तिमे विश्वास, अवतारवादसे छुट्टी, योगसाधना, मृतकश्राध्द निषेध, दलितोध्दार, छूआछूतका भगाना, पुराण पाखंड खंडन राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति ईश्वरके निजनाम ओ३म्की प्रतिष्ठापना वैदिक अभिवादन नमस्ते जो १९१५ के शिकॅगोकी सर्व धर्म परिषदमे आर्यसमाजी पं. अयोध्याप्रसाद, (कलकत्ता) ने सब संसारके लिये स्वीकृत कराया था उस नमस्ते का प्रयोग, नवग्रहपूजा फल ज्योतिष पाखंड, पंच देव पूजा, चेतन मूर्तिपूजा, इत्यादि मौलिक सिध्दान्तोसे भरपूर, ऐसे आर्य समाज मे जो न आवे, तो वह अपने जीवन को किसप्रकार सच्चे अर्थमे निर्माण करेगा ?

आर्य शब्द :

आर्य शब्द ऋ - गति, क्रिया धातुसे बना है जिससे स्पष्ट है कि आर्य का जीवन गतिशील - सातत्य गमने To move constantly एवं क्रियाशील रहता है। जो अकर्ता है सो दस्यु संज्ञाके पात्र है। उत्तम विद्या, एवं सच्चे धर्म सामर्थ्य, तथा श्रेष्ठ गुणकर्मस्वभावसे आर्य कहलाता है। आर्य ईश्वरपुत्रकोभी कहते है। अर्यते सततंच आर्ते - जो पीडित शरणागतोका रक्षक और आश्रयदाता है वह आर्य है । आराद् याति इति आर्य - जो द्वेष से दूर है वह आर्य है। अर्यः एवं आर्य - जो जितेन्द्रिय है वह आर्य है। आर्याव्रता विसृजन्तो अदिक्षमिं - ऋ १०-६५-११ जो पृथ्वीपर सत्य, अहिंसा, परोपकार, पवित्रता, एवं उत्तम व्रतोका धारण करता है वह आर्य संज्ञा को पात्र है, इस परसे यह स्पष्ट होता है कि आर्य गुणवाचक शब्द है और संसारके सारे श्रेष्ठ गुणी पुरुष आर्य कहलाते है। परमपिता परमत्माने इसीलिये अपनी वेदवाणीमे कहा है कि अहं भूमिं अददाम आर्याय। यह भूमि आर्योके लिये मैने प्रदान की है। ऐ संसारके लोगो। क्या आप इस भूमि को चाहते नही, यदि चाहते हो तो स्वयं आर्य बने और स्वामी दयानंद प्रवर्तित आर्य समाजमेही आवे कारण समस्त संसारको आप जैसे आर्य बनानाहै, बस यही विश्वशांती और ईश्वर भक्तिका एकमेव मार्ग है। अतः आजही आर्य समाज मे जाकर अपना प्रवेश पत्र भर दें और जहां कही आर्य समाज न हो, तो ऐसी संस्था स्थापित करनेका भरसक प्रयत्न पूर्ण करें, ध्यान रहें यह ईश्वरीय कार्य है ; आज

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल हिंदु शब्द का बहुत प्रवचन हो रहा है यद्यपि गीता महाभारत रामायण और सभी वैदिक साहित्यमे हिंदु शब्द कही भी लिखा नही है। हिन्दु शब्द मूल फारसी भाषा का है और फारसी शब्दकोष ख्याबां और गयास लुगात नुसार हिंदु शब्द का अर्थ इस प्रकार है -

''हिंदु दर महावरा फारसियान मअने दुज्दो रहजनो गुलाम मी आयद''
हिंदु शब्द चोर डाकु रहजन (मार्ग का लुटेरे) और गुलाम (बंदी) के अर्थोमे आता है। २) हिंदु ए तो बिल्कसर, गुलाम व बन्दा अे तो। (कशफ) तेरा दास और तेरा बंदी ३) हिंदु ब कसर गुलाम व बन्दह काफिर ब तेग। (कशफ) ४) चे हिंदु हिंदु ए काफीरचे काफिर काफिरे, रहजन चे रहजन रहजने इमान (चमन बेनझीर) अर्थात् हिन्दु क्या है ? हिन्दु काफिर है। काफिर क्या है। काफिर रहजन है। रहजन क्या है। रहजन इमानपर डाकामारनेवाला है। आप स्वयं विचार करिये कि आप किस प्रकार स्वयं हिंदु कहने का गर्व करते रहो ? अरे, कर्म भ्रष्ट हुये तो हुये पर नामभ्रष्ट क्यों हो रहे हो। सन १८२० की घटना है, काशीमे ८५ पंडित विद्वानोकी सभा महाराजाधिराज काशी नरेश की अध्यक्षतामे हुई थी। इस सभामे पंडितोने प्रश्न उठाया कि सारे लोग हमे हिंदु कहते है। हिन्दु शब्द यवनोका चलाया है , तब हम हिंदु कैसे ? समाधान दिया गया कि वर्णाश्रम देश बोधक जो हिन्दु शब्द है, सो यवन संकेतित है और वर्णाश्रमी बोधक जो हिन्दु शब्द है यह भी यवन संकेतित है, इस कारण हिन्दु कहावना सर्वथा अनुचित है। काशीक्षेत्र के इस महत्वपूर्ण निर्णय पर अमल करना अपना कर्तव्य है। ध्यान रहे काशी विश्वनाथ के मंदिर पर जो पट्ट है उसपर स्पष्ट लिखा है कि आर्येतरस्य प्रवेश निषिध्दः वहां हिन्दु शब्द ही नही अब आपही विचार करें कि आप हिन्दु है या आर्य ! जब हिन्दु हि नही तो आर्य बनकर या बननै आर्य समाजमे सदस्य बने और संसारका कल्याण करें, क्या यह आर्य समाज की विशेषता नही है ? परमात्मा आपको सुबुध्दि दें।

गर्व से कहो हम आर्य है।
आर्य हमारा नाम है , वेद हमारा धर्म।
ओ३म हमारा इष्ट है, सत्य हमारा कर्म॥
जो बोले सो अभय, वैदिक धर्म की जय॥

दि. १-३-९६

श्रीमुनि वशिष्ठ आर्य
वानप्रस्थ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१) शान्तास्तिति क्षुर्दान्तिध्य सत्यवादी जितेन्द्रियः ।
दाता दयालुर्नम्रश्च आर्यः स्याद् अष्टभिर्गुणैः ॥

महर्षि वेद व्यास : महाभारत

शान्त सहनशील मनसंयमी सत्यवादी जितेन्द्रिय दानी दयालु और विनयशील - इन अष्टगुणोसे आर्य होता है ।

२) समानी प्रपा सहवो अन्नभागः समाने योक्त्रे सहवो युनज्मि ।
समंचोअग्निं सपर्यतारा नाभिं अवामितः ॥
हे मनुष्यों ! तुम्हारे जलपान खानपान एवं यान आदि समान हो तुम्हे चक्र के आरो की भांति पारस्परिक कल्याण, सद्भाव और उन्नति के धर्म रुप केन्द्रसे जोडता हूं ।

३) मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा ।
समंच सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ॥ अथर्व ३/३०/३
भाई भाई से बहन बहनसे या भाई बहन एक दूसरे से द्वेष न करें, सब एक साथ मिलकर समव्रती होकर वाणीसे मंगलकारी बोले ।

४) संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथापूर्वे संजानाना उपासते ॥ ऋ १०/१९१/२
हे मनुष्यों । तुम परस्पर मिलकर चलो । परस्पर मिलकर बात करो, तुम्हारे मन एक समान होके ज्ञान प्राप्त करें, जिसप्रकार पूर्व विद्वान जन सेवनीय प्रभुको जानकर उपासना करते है वैसे तुमभी करो ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

-: आर्य समाज के नियम और उद्देश्य :-

१) सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है ।

२) ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

३) वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४) सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

५) सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिये।

६) संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७) सब से प्रीति-पूर्वक धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिये।

८) अविद्या का नाश और विद्या की वृध्दि करनी चाहिये।

९) प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये। किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

१०) सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व-हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये। और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.